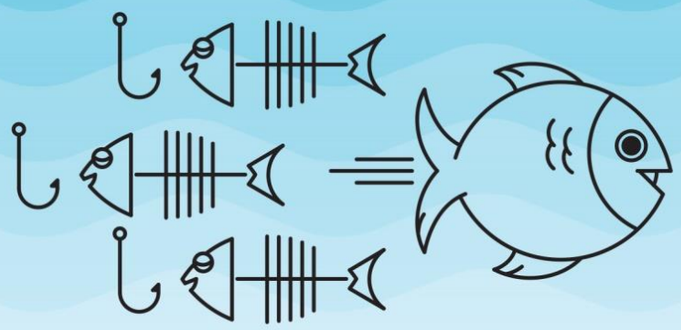

सितंबर 2018

"पुरानी बातें समाप्त हो गयी हैं, और सब कुछ नया हो गया है |

(2 कुरिन्थियों 5:17)

पवित्र पाठ:- 2 कुरिन्थियों 5:14-21

विचार

"हम मसीह के राजदूत हैं" (वचन 20)। पौलुस ने इस साहसिक घोषणा में सभी विश्वासियों की भूमिका को पूर्ण स्पष्टता और निश्चितता से समझाया है। एक राजदूत वह व्यक्ति होता है जो एक प्रभुत्व-संपन्न शक्ति से दूसरे शक्तिशाली देश में अपने देश, उसके शासक और उसके मूल्यों और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करनें के लिए भेजा जाता है। धरती पर रहते हुए, मसीह ने अपने पिता और उनके राज्य का प्रतिनिधित्व किया, जिससे हमें एक उदाहरण मिल जाए कि सच्चे विश्वासियों के रूप में हमें किस प्रकार जीना चाहिए। बपतिस्मा के माध्यम से हमें न केवल ईश्वर की संतान कहलाने का सुनेहरा सौभाग्य प्राप्त होता है, अपितु हमें येसु के संदेशों की सहायता से संसार को पिता के साथ पुनः मेल-मिलाप कराने की ज़िम्मेदारी भी मिलती है। पोप फ्रांसिस ने मिशनरीयों को (डिसाईपल्शिप) शिष्यवृत्ति की आवश्यक विशेषताओं को समझाते हुए कहा था, "हमारे प्रभु येसु मसीह में एक होकर और उन्हें धारण कर के, अर्थात - मसीह के राजदूत बनकर - मसीह को दूसरों तक पहुँचाया जा सकता है ..." (एंजेलस 3 जुलाई, 2017)।

पौलुस अपने चुनाव और बुलाहट के प्रति हमेशा ही उत्साही रहा (2 पेत्रुस 1:10) । प्रेरित चरित की पुस्तक का अंत पौलुस की नजरबंदी से होती है, जहाँ हमेशा एक सैनिक उन पर नज़र रखने को तैनात था | ऐसे में भी पौलुस उन सभी का स्वागत करते जो उनके पास आते थे, ईश्वर के राज्य का प्रचार और प्रभु येसु मसीह के बारे में खुलेआम और बिना हिचकिचाए शिक्षा देते थे । उनकी नज़रबंदी के बावजूद भी, पौलुस कैसे सुसमाचार के इतने उत्साही संदेशवाहक बने रह पाए? क्या यह येसु में पूर्ण विश्वास नहीं था? पौलुस के क्रूसित येसु के साथ आकस्मिक भेंट से उनके जीवन में इतना कृपापूर्ण परिवर्तन आया कि उन्हें अनुभव हो गया कि अब वे अपने लिए नहीं बल्कि केवल येसु के लिए जिंदा हैं जो उनके लिए मर गए और स्वर्ग में आरोहित हो गए (वचन 15)। वचन 16 में उनका *'अब से'* कहना पौलुस के मुठभेड़ के अनुभव के बाद उनके जीवन में परिवर्तन को दर्शाता है। पद संख्या 17 में उनकी भावुक पुकार, जो कि शायद बाईबल के सबसे खूबसूरत वचनों में से एक है, कृपा के परिवर्तनकारी प्रभाव की सुन्दर गवाही है जो कि उनके जीवन में आई थी - "जो कुछ पुराना था बीत चुका है, देखो सब नया हो गया है!" पौलुस को अपने कार्य करने का उत्साह उसके गहरी कृतज्ञता की भावना से आती थी, क्योंकि परमेश्वर की करुणा से वो पापियों में से सबसे बुरा पापी होने के बावजूद मसीह की कृपा से ईश्वर से जुड़ पाया। पद संख्या 18 में जब वह कहते हैं, "यह सब ईश्वर ने किया है", इस वचन से वह नवजीवन की अपनी अवधारणा को समझाते हैं जिसे हम मुफ्त में प्राप्त करते हैं। ईश्वर के गहरे प्रेम से प्रेरित होकर वह मेल-मिलाप के दूत बनने को तैयार होते हैं, जिसे उन्होंने पूर्ण रूप से स्वयं अनुभव किया | वे उन लोगों के लिए राजदूत बनने को तैयार होते हैं जिन्होंने कभी ईश्वर या ईश्वर द्वारा अपने जीवन अविश्वसनीय चीज़ो का अनुभव नहीं किया है |

क्या हमारी आंखें अभी भी बंद हैं, या क्या हम क्रूस की परिवर्तनकारी कृपा को भीतर से अनुभव कर सकते हैं? हमारा पुराना अस्तित्व (घमंड, आलस, क्रोध, वासना, स्वार्थ अदि से भरा) बीत गया है । ईश्वर ने येसु के द्वारा सब नया कर दिया है; उन्होंने पापहीन होने के बावजूद हमारे पापों की कीमत चुकाई ताकि उनमें हम ईश्वर की धार्मिकता बन सकें ! ईश्वर के सामने सच्चे बनने की प्रत्यक्षता ही है जो हमें ऊंची आवाज़ में हर्ष के साथ चिल्ला उठने को बाधित कर देती है | यह उनकी दया से शुद्ध होने की और आंतरिक स्वतंत्रता मिलने की जागरूकता है जो हमें यह जीवनदायी संदेश हर किसी के साथ बाँटने को प्रेरित करता है | मसीह के पुनरुत्थान की शक्ति हमें इस सुसमाचार को उन सभी लोगों के साथ बाँटने का बल प्रदान करे जो जानते हुए या अनजाने रूप से पूर्ण होने की इच्छा रखते हैं। आइए हम इस अनुग्रह का एक संदेशवाहक बनने का प्रयास करें, चाहे जो मौसम हो, जो भी हम कहें या करें, चाहे जीवन में परीक्षा हो या आराम, हमारे जीवन की आखिरी सांस तक हम प्रयास करते रहें। हाँ, वास्तव में जो पुराना था वो समाप्त हो गया है और नया आ गया है।

संतों के मुख से

"यदि कोई भी मेरे पास आए तो मैं उसे उसकी दिशा में ले जाना चाहती हूँ |" (क्रूस की संत तेरेसा बेनेडिकटा)

करने हेतु

आपको नया बना देने वाले त्रित्व के प्रेम के प्रति जागरूकता में और अधिक गहराई में उतरने का प्रयास करें, और साथ में उसे अन्य लोगों के साथ हर संभव तरीके से बाँटने का अवसर खोजें |